# शतरुद्रियम्

(मन्त्रपाठक्रमः)

प्रथमावृत्तिः सं० २०७१

सन् २०१४

Scanned by CamScanner

# शतरुद्रियम्

(मन्त्रपाठक्रमः)

सम्पादकः

**डॉ० हरिहरशर्मा ''आत्रेयः''**

मदनपोखरा-१, पालपा, नेपालाभिजनः

**प्रथमावृत्तिः सं० २०७१** सन् २०१४



Scanned by CamScanner

ॐ

॥ गौरीशंकराभ्यां नमः॥

गौरीश गौरीश हर स्मरारे

गौरीश गौरीश पिनाकपाणे।

गौरीश गौरीश्वर विश्वमूर्ते

गौरीश शम्भो शिव शंकरेति॥

हर भव शिव रुद्र चन्द्रमौले!

गिरिश गणेश महेश पार्वतीश!!

इति मम वदतो दिनानि यान्तु

स्मरहर! किं बहुजल्पकल्पनाभिः॥

यमभटैर्हियमाणमयन्त्रणैरशरणं शरणं चरणौ श्रितम्।

घनघृणामृतनिर्भरया दृशा मदनमर्दन! मामवलोकय॥



Scanned by CamScanner

# शतरुद्रिय-महिमा

आशुतोष भगवान् शिव की उपासना में ''शतरुद्रिय'' का विशिष्ट माहात्म्य शास्त्रों में बताया गया है। रुद्राष्टाध्यायी का जो माहात्म्य है वही शतरुद्रिय का माहात्म्य है। रुद्राष्टाध्यायी के पाँचवे अध्याय को शतरुद्रिय कहा गया है जिस में भगवान् रुद्र के शताधिक नामों से उन्हें नमस्कार किया गया है। भट्टभास्कर ने उपोद्घात भाष्य में लिखा है-

**''शतं रुद्रा देवता अस्येति शतरुद्रीयमुच्यते॥''**

## सम्पूर्ण वेदों के पारायण के तुल्य है शतरुद्रिय का पाठ

वेदव्यासजी ने अर्जुन को बताया है- ''हे पार्थ! यह शतरुद्रिय वेदसम्मित, परम पवित्र, धन, आयु, यश बढ़ाने वाला सभी मनोरथों को सिद्ध करने वाला, सब कल्मषों का नाशक, सब पापों का प्रशामक, सब प्रकार के दु:ख और भय को दूर करने वाला है। भक्तिभाव से सदा तत्पर रहकर शतरुद्रिय का पाठ और श्रवण करने से मनुष्य आशुतोष भगवान् शिव के कृपाप्रसाद से समस्त उत्तम कामनाओं को प्राप्त करता है।''

**सर्वार्थसाधनं पुण्यं सर्वकिल्विषनाशनम्।**
**सर्वपापप्रशमनं सर्वदु:खभयापहम्॥**
**पठन् वै शतरुद्रीयं श्रृण्वंश्च सततोत्थित:।**
**वरान् कामान् स लभते प्रसन्ने त्र्यम्बके नर:॥**

महा०द्रोणपर्व २०२/१८४-१५२

वायुपुराण में कहा गया है- जितेन्द्रिय होकर शतरुद्रिय का पाठ करने से रोगी रोग से और पापी पाप से मुक्त होकर उत्तम सुख प्राप्त करता है। जो निरन्तर शतरुद्रिय का पाठ करता है वह परम मुक्ति प्राप्त करता है -

**रोगवान् पापवांश्चैव रुद्रं जप्त्वा जितेन्द्रिय:।**
**रोगात् पापाद् विनिर्मुक्तो ह्यतुलं सुखमश्नुते॥**
**भस्मदिग्धशरीरस्तु भस्मशायी जितेन्द्रिय:।**
**सततं रुद्रजाप्योऽसौ परां मुक्तिमवाप्स्यति॥**

वायुपुराणम्



Scanned by CamScanner

ईश्वरगीता में भगवान् शिव ने कहा है- 'वेदों में मैं सामवेद हूँ तथा यजुर्वेदीय मन्त्रों में मैं 'शतरुद्रिय' हूँ'-

**वेदानां सामवेदोऽहं यजुषां शतरुद्रियम्॥ (ईश्वरगीता ७/९२)**

उपनिषदादि वेदान्त, शतरुद्रिय तथा प्रणव के जप को विद्वानों ने मनुष्य के सत्व की शुद्धि करने वाला स्वाध्याय बताया है-

**वेदान्तशतरुद्रीय-प्रणवादिजपं बुधाः।**
**सत्वशुद्धिकरं पुंसां स्वाध्यायं परिचक्षते॥**

ई० गीता ११/२२

एकान्त में चित्त एकाग्र कर जो द्विज नित्य शतरुद्रिय का पाठ करता है वह परम पद प्राप्त करता है-

**अथवा शतरुद्रीयं जपेदामरणाद् द्विजः।**
**एकाकी यतचित्तात्मा स याति परमं पदम् ॥**

ई०गीता ११/१००

महर्षि याज्ञवल्क्य ने अथर्ववेदीय जावालोपनिषद् में शतरुद्रिय को अमृतत्व का साधन कहा है- ये (शतरुद्रिय में आये हुए) नाम साक्षात् अमृत स्वरूप परमात्मा के नाम है। इन नामों के जप से जीव अमृत हो जाता है-

**अथ हैनं ब्रह्मचारिण ऊचुः 'किं जप्येनामृतत्वं ब्रूहीति। स होवाच याज्ञवल्क्यः 'शतरुद्रियेणेत्येतान्येव ह वा अमृतस्य नामानि, एतैर्ह वा अमृतो भवतीति, एवमेवैतद् याज्ञवल्क्यः॥** (जाबालोपनिषद् ३)'

कृष्णयजुर्वेदीय कैवल्योपनिषद् में भगवान् ब्रह्मा ने महर्षि आश्वलायन से कैवल्य पद प्राप्ति के साधन भूत शतरुद्रिय का माहात्म्य इस प्रकार बताया है- ''जो शतरुद्रिय का पाठ करता है वह अग्नि, वायु के तुल्य आत्मपूत होता है। सुरापान, ब्रह्महत्या, सुवर्ण की चोरी आदि पापों से छूट जाता है। शुभाशुभ कर्मो से उद्धार पाता है। भगवान् सदाशिव के आश्रित होकर अविमुक्त स्वरूप हो जाता है। आश्रमों से अतीत परमहंसों को सर्वदा अथवा एकबार इसका पाठ अवश्य करना चाहिए। इस (शतरुद्रिय) के पाठ से भवसागर का नाश करने वाले ज्ञान की प्राप्ति होती है। इसलिये इसे इस प्रकार जानकर मनुष्य कैवल्यरूप मुक्तिपद को प्राप्त होता है-''



Scanned by CamScanner

यः शतरुद्रियमधीते सोऽग्निपूतो भवति, स वायुपूतो भवति, स आत्मपूतो भवति, स सुरापानात्पूतो भवति, स ब्रह्महत्यायाःपूतो भवति, स सुवर्णस्तेयात् पूतो भवति, स कृत्याकृत्यात् पूतो भवति, तस्मादविमुक्तमाश्रितो भवति, अत्याश्रमी सर्वदा सकृद् वा जपेत्॥

अनेन ज्ञानमाप्नोति संसारार्णवनाशनम्।
तस्मादेवं विदित्वैनं कैवल्यं पदमश्नुते।इति॥

(कैवल्योपनिषद्)

शतरुद्रिय नाम से एक सौ मन्त्रों का पाठ करने की परम्परा है। इस सन्दर्भ में निम्न श्लोक प्रसिद्ध है-

**षट्षष्टिर्नीलसूक्तं च, पुनःषोडशमेव च।**
**एष ते द्वे, नमस्ते द्वे, नतं विद्वयमेव च॥**
**मीदुष्टमेति चत्वारि, वयश्छंसोमाष्टमेव च।**
**वेदवादिभिराख्यातमेतद्वै शतरुद्रियम्॥**

अर्थात् रुद्राष्टाध्यायी के पञ्चमाध्याय के **'नमस्ते रुद्र .....जम्भे दध्मः'** तक ये ६६ मन्त्र, फिर पञ्चम के ही **'नमस्ते रुद्र०..... हवामहे'** ये १६ मन्त्र, षष्ठाध्याय के **'एष ते रुद्र०, अवरुद्र मदीम०'** ये २ मन्त्र, पञ्चमाध्याय के **नमस्ते०, या ते रुद्र०** ये २ मन्त्र, फिर शुक्ल यजुर्वेद संहिता के १७वें अध्याय के ३१वें तथा ३२वें **'न तं विदाथ०, विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट०** ये २ मन्त्र, फिर पञ्चमाध्याय के **मीढुष्टम शिवतम०** से **असंख्याता सहस्राणि०** तक ८ मन्त्र, इन का इस उक्त क्रम से पाठ करने पर सौ मन्त्र हो जाते हैं जिन्हें **'शतरुद्रिय'** कहा जाता है।

## किञ्चिन्निवेदनम्

यद्यपि गुरुदेव के सङ्कलन में क्रम कुछ भिन्न है। ६६ मंत्रों के बाद षष्ठाध्याय रखा गया है, अन्त में मीढुष्टम० आदि ४ मन्त्र हैं। तथापि वाराणसी से प्रकाशित प्राचीन रुद्राष्टाध्यायी में शतरुद्रिय क्रम में ९२ मन्त्रों के अनन्तर अन्त में षष्ठाध्याय (८ मन्त्र) छपा हुआ है। ऐसे ही दिल्ली से प्रकाशित (पं० भोजराज द्विवेदी) **''सस्वर रुद्राभिषेक प्रयोग''** में षष्ठाध्याय अन्त में रखा गया है-**'मीढुष्टमेति चत्वारि, वयं च वसुसंख्यया। शतरुद्री समाख्याता यजुर्वेदेन भाषिता॥'** गीताप्रेस से प्रकाशित रुद्राष्टाध्यायी की



Scanned by CamScanner

भूमिका में भी उपर्युक्त क्रम ही लिखा हुआ है।

मेरा अनुभव है कि आज भी अनेकत्र इसी शतरुद्रिय (१०० मन्त्र) की एकादश आवृत्ति (प्रथम चार अध्याय पाठ के अनन्तर 'शतरुद्रिय' की ११ आवृत्ति करके सप्तम-अष्टम तथा शान्ति अध्याय पाठ) से रुद्राभिषेक करने की परम्परा विद्यमान है।

इसलिये यहाँ इसी क्रम का अनुसरण किया है। बड़े गुरुजी तथा छोटे गुरुजी नित्य तन्मय होकर निष्ठापूर्वक शतरुद्रिय का पाठ करते थे। आज भी अनेक विद्वज्जन इसके पाठ को अपनी उपासना पूजा का अङ्ग बनाये हुए हैं। अतः श्रद्धालु उपासकों की सुविधा हेतु इसे प्रकाशित करने की लालसा चिर काल से थी। पहली बार प्रेस में दी गयी प्रेस कापी तथा अग्रिम राशि दोनो को प्रेस उदरसात् कर गया। यह द्वितीय प्रयत्न भगवान् की अनुकम्पा से सफल हो-यही प्रार्थनीय है। शिवम्।।

सुधियः प्रार्थनीया मे क्षन्तव्या धृष्टता च्युतिः।
समाधानेन चैवायं निर्देष्टव्योऽविचक्षणः ।।

सं० २०७१ भाद्रशुक्लाष्टमी
श्रीताम्रेश्वरनाथधाम,
कबीरनगरम् (उ०प्र०)

निवेदक :
**डॉ० हरिहरशर्मा "आत्रेयः"**



Scanned by CamScanner

# 卐 अथ शतरुद्रियम् 卐

## शान्तिपाठः

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोतऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥१॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥२॥ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे । शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हिꣳसीः पुरुषञ्जगत्॥३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमनाऽअसत्॥४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहाँश्च सर्वाञ्जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव॥५॥ असौ यस्ताम्रोऽअरुण ऽ उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनꣳरुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳहेड ईमहे॥६॥ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनङ्गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽअस्य सत्वानोऽहन्तेभ्योऽकरन्नमः॥८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्तऽइषवः पराता भगवो वप॥९॥ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २॥ऽउत॥ अनेशन्नस्य या ऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः॥१०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया



Scanned by CamScanner

परिभुज।।११।। परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः। अथो य ऽ इषुधिस्तवारे ऽअस्मन्निधेहितम्।।१२।। अवतत्य ध नुष्ट्वꣳसहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव।।१३।। नमस्त आयुधायानाततायै ध ष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने।।१४।। मा नो महान्तमुत मा नो ऽ अर्भकम्मान ऽउक्षन्तमुत मानऽउक्षितम्। मा नो वधीः पितरम्मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः।।१५।। मा न स्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।१६।।

नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरि केशेभ्यः पशूनां पतये नमो नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमो नमो बभ्लुशाय।।१७।। नमो बभ्लुशाय व्याधिनेऽन्नानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानां पतये नमो नमो रोहिताय।।१८।। नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो नमऽउच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनां पतये नमो नमः कृत्स्नायतया।।१९।। नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन ऽआव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमो नमो वञ्चते।।२०।। नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिणऽइषुधिमते तस्कराणां



Scanned by CamScanner

पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघाꣳसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमो ऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः।।२१।।

नमऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नमऽइषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो नम ऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नमऽआयच्छद्भ्योस्यद्भ्य श्च वो नमो नमो विसृजद्भ्यः।।२२।। नमो विसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्य श्च वो नमो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः शयानेभ्य ऽआसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमो नमः सभाभ्यः ।।२३।। नमः सभाभ्यः सभापतिभ्य श्च वो नमो नमो ऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नम ऽ आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम ऽउगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्च वो नमो नमो गणेभ्यः।।२४।। नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः।।२५।। नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्योऽअरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्च वो नमः।।२६।।

नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्य श्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमो नमः श्वभ्यः।।२७।। नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपर्दिने।।२८।। नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय



Scanned by CamScanner

च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च नमो ह्रस्वाय।।२९।। नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च नम ऽआशवे।।३०।। नमऽआशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नमऽऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च।।३१।।

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च नमः सोभ्याय।।३२।। नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमऽउर्वर्याय च खल्याय च नमो वन्याय।।३३।। नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नमऽआशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च नमो बिल्मिने ।।३४।। नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्णवे।।३५।। नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च।।३६।।

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च नमः कूप्याय।।३७।। नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीध्र्याय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च नमो वात्याय।।३८।। नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्राय च



Scanned by CamScanner

नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः शङ्गवे ।।३९।। नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम ऽउग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरेवध ाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय।।४०।।

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।४१।। नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च नमः सिकत्याय।।४२।। नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किंशिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नम ऽइरिण्याय च प्रपत्थ्याय च नमो ब्रज्याय ।।४३।। नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च नमः शुष्क्याय।।४४।। नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पाशंसव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नमऽऊर्व्याय च सूर्व्याय च नमः पर्णाय।।४५।। नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नमऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नमऽआखिदते च प्रखिदते च नमऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानाशंहृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नमऽआनिर्हतेभ्यः।।४६।।

द्रापे ऽअन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित। आसाम्प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ् मो च नः किञ्चनाममत्।।४७।। इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टङ्ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम्।।४८।। या ते रुद्र



Scanned by CamScanner

शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी। शिवारुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे।।४९।। परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्मतिरघायोः। अवस्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड।।५०।।

मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्षऽआयुध न्निधाय कृत्तिं वसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि।।५१।। विकिरिद्र विलोहित नमस्तेऽअस्तु भगवः। यास्ते सहस्रꣳ हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः।।५२।। सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीनामुखा कृधि।।५३।। असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽअधिभूम्याम्। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।५४।।

अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि। तेषाꣳसहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।।५५।। नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳरुद्राऽउपश्रिताः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽ व धन्वानि तन्मसि।।५६।। नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽअधः क्षमाचराः। तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।५७।। ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।५८।। ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।५९।। ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलबृदाऽ आयुर्युधः। तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।६०।। ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।६१।। येन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।६२।। यऽएतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे। तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि



Scanned by CamScanner

तन्मसि।।६३।।

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः।।६४।। नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वातऽइषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः।।६५।। नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नो ऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भेदध्मः।।६६।।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोतऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।६७।। या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ।।६८।। यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हिꣳसीः पुरुषञ्जगत्।।६९।। शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमनाऽअसत्।।७०।। अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीꣳश्च सर्वाञ्जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽध राचीः परासुव।।७१।। असौ यस्ताम्रोऽ अरुणऽउत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनꣳरुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳ हेडऽईमहे।।७२।। असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनङ्गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः।।७३।। नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये ऽअस्य सत्त्वानोऽहन्तेभ्योऽकरन्नमः।।७४।। प्रमुञ्च ध



Scanned by CamScanner

न्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्तऽइषवः परा ता भगवो वप।।७५।। विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ2।।ऽउत। अनेशन्नस्य याऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः।।७६।। या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज।।७७।। परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः। अथो यऽइषुधिस्तवारे ऽअस्मन्निधेहितम्।।७८।। अवतत्य ध नुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमनाभव।।७९।। नमस्तऽआयुधायानाततायधृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने।।८०।। मानो महान्तमुत मानोऽअर्भकं मा न ऽउक्षन्तमुत मा नऽउक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः।।८१।। मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मा नो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।८२।।

ॐ एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राऽम्बिकया तज्जुषस्व स्वाहैष ते रुद्र भागऽआखुस्ते पशुः।।८३।। अवरुद्र मदीमह्यव देवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्यसस्करद् यथा नः श्रेयसस्करद् यथा नो व्यवसाययात्।।८४।।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत ऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।८५।। या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।।८६।।

ॐ न तं विदाथ यऽइमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव। नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृपऽउक्थशासश्चरन्ति।।८७।। विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट देवऽआदिद् गन्धर्वोऽअभवद् द्वितीयः। तृतीयः



Scanned by CamScanner

पिता जनितौषधीनामपां गर्भं व्यदधात् पुरुत्रा।।८८।।

ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्षऽआयुधन्निधाय कृत्तिं वसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि।।८९।। विकिरिद्र विलोहित नमस्तेऽअस्तु भगवः। यास्ते सहस्रꣳहेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः।।९०।। सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ।।९१।। असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।९२।।

ॐ वयꣳ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।९३।। एष ते रुद्रभागः सह स्वस्राऽम्बिकया तञ्जुषस्व स्वाहैषते रुद्र भागऽआखुस्ते पशुः।।९४।। अवरुद्र मदीमह्यव देवन्त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्यसस्करद् यथा नः श्रेयसस्करद् यथा नो व्यवसाययात्।।९५।। भेषजमसि भेषजङ्गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम्। सुखं मेषाय मेष्यै।।९६।। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।।९७।। एतत्ते रुद्राऽवसन्तेन परो मूजवतोऽतीहि। अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा ऽअहिꣳसन्नः शिवोऽतीहि।।९८।। त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्।।९९।। शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मा माहिꣳसीः। निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय।।१००।।



Scanned by CamScanner

# प्रार्थना नमस्कारः

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥१॥ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बल प्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥२॥ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥३॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥४॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽअस्तु सदा शिवोऽम्॥५॥

## शान्तिपाठः

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

॥ॐ तत्सत् साम्बसदाशिवार्पणमस्तु॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः॥

卐ॐ卐ॐ卐



Scanned by CamScanner